ओ३म्

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदत्त)

आर्य युवती परिषद् एवं आई. क्यू. ए. सी.

के तत्त्वावधान में

पंचदिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला

विषय : *वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता*

22 अप्रैल से 27 अप्रैल, 2022 तक

आमन्त्रित विशेषज्ञ विद्वान्

22 अप्रैल, 2022 – प्रो. रूपकिशोर शास्त्री
कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी
समविश्वविद्यालय, हरिद्वार

23 अप्रैल, 2022 – स्वामी [illegible]
संस्थापक, [illegible] कुरुक्षेत्र

25 अप्रैल, 2022 – प्रो. सुरेन्द्र [illegible]
प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

26 अप्रैल, 2022 – डॉ. वागीश आचार्य
प्राचार्य, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, एटा

कार्यशाला में आमन्त्रित विशेषज्ञ विद्वान् वक्ता का वक्तव्य प्रतिदिन अपराह्न 1.00 से 2.30 बजे तक होगा।

सादर

सुमन राजन (डॉ.)
संयोजिका, आर्य युवती परिषद

अंजु चावला
संयोजिका, आई. क्यू. ए. सी.

विजेश्वरी शर्मा (डॉ.)
प्राचार्या

ओ३म्

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदत्त)

आर्य युवती परिषद् एवं आई. क्यू. ए. सी.

द्वारा आयोजित

पंचदिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला

विषय : *वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता*

का

समापन समारोह

बुधवार 27 अप्रैल, 2022 प्रातः 10 बजे

स्थानः पण्डित [illegible] विद्यार्थी सभागार

मुख्य अतिथि – मानतीय आचार्य देवव्रत जी
महामहिम राज्यपाल, गुजरात

विशिष्ट अतिथि – श्री नायब सिंह सैनी जी
सांसद, कुरुक्षेत्र

प्रवर अतिथि – श्री सुभाष सुधा जी
विधायक, थानेसर

समापन समारोह में अधिकृत प्रतिभागी कृपया समय से 15 मिनट पूर्व अपना स्थान ग्रहण कर लें।

सादर

सुमन राजन (डॉ.)	अंजु चावला	विजेश्वरी शर्मा (डॉ.)
संयोजिका, आर्य युवती परिषद	संयोजिका, आई. क्यू. ए. सी.	प्राचार्या

Dayanand Mahla Mahavidyalaya, Kurukshetra

Notice (2021-22) **Date: 21.04.2022**

सभी प्राध्यापिकाओं को सूचित किया जाता है कि Faculty Development Programme के अन्तर्गत पंचदिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला कल दिनांक 22.04.2022 से प्रारम्भ हो रही है। अतः दिनांक 22.04.2022 से दिनांक 26.04.2022 तक प्रतिदिन प्रत्येक पीरियड की समयावधि 30 मिनट होगी। आप सभी सेमिनार हॉल में प्रतिदिन दोपहर 12:45 बजे उपस्थित होना सुनिश्चित करें। इसकी अनुपालना अनिवार्य है।

Principal
प्राचार्या
Dayanand Mahla Mahavidyalaya
Kurukshetra (Haryana)

संयोजिकाएं
श्रीमती अंजु चावला – आई0 क्यू0 ए0 सी0
डॉ0 सुमन राजन – आर्य युवती परिषद

English	Commerce	Mathematics
Dr. (Mrs.) Deepa	Mrs. Meenakshi Thakral	Dr. (Mrs.) Upasana Ahuja
Dr. (Mrs.) Neha	Mrs. Anju Chawla	Mrs. Prabhjot Kaur
Dr. (Mrs.) Ritu	Mrs. Sapna Arora	Ms. Sukriti
Mrs. Reena	Mrs. Sudha Sethi (T.W.I.)	Ms. Garima
Ms. Vinita	Mrs. Veenu Madan	**Chemistry**
Dr. (Mrs.) Alka	Dr. (Mrs.) Geetanjali	Mrs. Asha Malik
Ms. Tanu Bura	Mrs. Manisha	Ms. Deepika
Ms. Parveen	Ms. Garima	Mrs. Rajwant
Hindi	Ms. Jyoti	**Physics**
Dr. (Mrs.) Manjeet Kaur	Ms. Reena	Mrs. Suman Rani
Dr. (Mrs.) Seema Singh	Ms. Sobiya	Mrs. Kiran
Dr. (Mrs.) Arti Aggarwal	Mrs. Monika	Ms. Mahak Rojra
Sanskrit	**Physical Edu.**	**Computers**
Dr. (Mrs.) Suman Rajan	Dr. (Mrs.) Anu Chauhan	Mrs. Bhavana
Dr. Reeja	**Economics**	Mrs. Shilpa
Music (V)	Dr. Himani	Ms. Neetu
Dr. (Mrs.) Shalu Rani	Ms. Pratiksha	Ms. Rekha Rani
Music (I)	**Home Science**	**Tourism**
Mrs. Geetu Saini	Dr. (Mrs.) Shweta Saini	Ms. Manisha
Psychology	Ms. Upasana	**Librarian**
Mrs. Urmila Singh	**Fashion Designing**	Dr. Pooja Sharma
Dr. (Mrs.) Urmila Panghal	Mrs. Akanksha	
Political Science	**Punjabi**	
Mrs. Saroj Bala	Dr. Sonia Rani	
History		
Dr. (Mrs.) Rukmesh		

Gmail

Dayanand Mahila Mahavidyalaya <dmmkkr2010@gmail.com>

Invitation

1 message

Dayanand Mahila Mahavidyalaya <dmmkkr2010@gmail.com> Sat, Apr 23, 2022 at 3:45 PM
To: aajsamajkkr <aajsamajkkr@gmail.com>, vikasbattan <vikasbattan@gmail.com>, ashripawan11 <ashripawan@gmail.com>, vishalnewsman <vishal.newsman@gmail.com>, jagmargnews <jagmargnews@gmail.com>, dainikjagrankkr <dainikjagrankkr@gmail.com>, aroravinodkkr <aroravinodkkr@gmail.com>, ujalakkr <ujalakkr@gmail.com>, kanwarsanjeev76 <kanwarsanjeev76@gmail.com>, barnadevilal <barna.devilal@gmail.com>, vedkkr <vedkkr@gmail.com>, vijayshahkkr <vijayshahkkr@gmail.com>

दिनांक 23.04.2022

आप सभी को सहर्ष सूचित किया जाता है कि दयानन्द महिला महाविद्यालय में 22 अप्रैल 2022 से आरंभ की गई पंचदिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला के समापन अवसर पर 27 अप्रैल 2022 को गुजरात के महामहिम राज्यपाल, आचार्य देवव्रत जी मुख्य अतिथि के रूप में पधार रहे हैं। इस अवसर पर आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

प्राचार्या

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरूक्षेत्र

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरूक्षेत्र

नैक द्वारा ग्रेड 'ए' प्रदत्त

पंचदिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला

विषय: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता

समापन समारोह: पल-प्रतिपल कार्यक्रम

मुख्य अतिथि: आचार्य देवव्रत जी, महामहिम राज्यपाल, गुजरात

दिनांक 27.04.2022 प्रात: 10:00 बजे

क्रमांक	कार्यक्रम	समय
1.	मुख्य-अतिथि का आगमन एवं स्वागत	10:00
2.	एन.सी.सी. टुकड़ी द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर	10:05-10:08
3.	जलपान	10:08-10:18
4.	राज्यपाल महोदय का कार्यक्रम स्थल पर आगमन	10:18-10:20
5.	दीप प्रज्ज्वलन वेद मंत्रों के साथ	10:20-10:22
6.	स्वागत गीत	10:22-10:25
7.	मुख्य-अतिथि का स्वागत, प्रधान, प्रबंधक समिति	10:25-10:30
8.	कार्यशाला विवरण (कार्यशाला संयोजिका)	10:30-10:33
9.	उद्बोधन श्री सुभाष सुधा, विधायक, थानेसर	10:33-10:38
10.	उद्बोधन श्री नायब सिंह सैनी, सांसद, कुरूक्षेत्र	10:38-10:43
11.	उद्बोधन महामहिम राज्यपाल महोदय	10:43-.....
12.	स्मृतिचिन्ह	2 मिनट
13.	धन्यवाद ज्ञापन - प्राचार्या	3 मिनट
14.	राष्ट्रगान	

Duties for Five Days National Educational Workshop

(22.04.2022 to 27.04.2022)

1	Reception	Conveners	– Mrs. Anju Chawla Dr. Suman Rajan	
2	Announcement	22.04.2022 23.04.2022 25.04.2022 26.04.2022 27.04.2022	Dr. Suman Rajan Dr. Arti Dr. Reeja Dr. Urmila Panghal – Mrs. Anju Chawla	
3	Ved Mantra Swagat Geet	22.04.2022 & 27.04.2022	Dr. Shalu Mrs. Geetu	– Sh. Suraj Pal (Tabla Player)
4	Deep Prajawalan	22.04.2022 27.04.2022	Dr. Upasna Dr. Anu Chauhan	Assist Smt. Vatsala
5	Printing of Banner and Invitation Card		Dr. Suman Rajan – Mrs. Anju Chawla	
6	Stage Setting (Sound System Name Plates/ Stage seating Decoration/ Banner)	All Five Days	Dr. Urmila Panghal Mrs. Sapna Dr. Seema	Assist Sh. Jaswant, Mr. Bantu, Smt. Mahedero, Smt. Babli, Mr. Sunil, Smt. Kusum
7	Decoration	27.04.2022 All Five Days	Dr. Neha Ms. Reena Ms. Upasna (Home Sci.)	
8	Seating Arrangement (Special Seats for Raj Bhawan Guests)	27.04.2022	Mrs. Minakshi Mrs. Rukmesh Dr. Manjeet Ms. Sobiya	Assist Sh. Jaswant, Mr. Bantu, Smt. Mahedero, Mr. Ravi, Smt. Vidya, Smt. Kusum
9	Refreshments	27.04.2022 All five days 27.04.2022	Dr. Shweta Dr. Himani Mrs. Asha (Sci.)	Assist Mrs. Ishro, Mrs. Ritu
10	Press Note	All five days 27.04.2022	Dr. Seema Dr. Reeja Mrs. Minakshi & Mrs. Reena Dr. Ritu	
11	Bouque/Mementoes (Purchasing/Banner/ Cards, Invitation)	All five days	– Mrs. Anju Chawla Dr. Suman Rajan Dr. Upasna Dr. Anu Chauhan	
12	Photography/ Videography (with Geotag etc.)	22.04.2022 - 26.04.2022 Dahiya Studio 27.04.2022 Sangeet Studio	Dr. Suman Rajan – Mrs. Anju Chawla	

Contd...2

13	Discipline	All five days 27.04.2022	Mrs. Urmila Singh Mrs. Prabhjot Kaur Dr. Deepa Dr. Geetanjali Ms. Vinita Mrs. Alka Mrs. Saroj Mrs. Veenu Mrs. Rajwant Mrs. Suman All Other Staff members will perform Discipline Duty	

Principal

Principal
Dayanand Mahila Mahavidyalaya
Kurukshetra (Haryana)

NAAC Accredited Grade 'A'

Dayanand Mahila Mahavidyalaya, Kurukshetra

Duty for the Valedictory Session of Five Days

National Educational Workshop

Date 23.04.2022

1.	Gaurd of Honour	Mrs. Sudha Sethi Ms. Vinita
2.	Pushp Varsha	Mrs. Pooja Mrs. Kiran Mrs. Suman Ms. Sobiya Ms. Jyoti Ms. Sukriti

Principal

Principal
Dayanand Mahila Mahavidya
Kurukshetra (Haryana

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र
प्रैस–नोट

दिनांक 21.04.2022

दयानन्द महिला महाविद्यालय में राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला का आयोजन

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरूक्षेत्र की आर्य युवती परिषद् एवं आई0 क्यू0 ए0 सी0 द्वारा Faculty Development Programme के अंतर्गत पाँच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला का आयोजन 22.04.2022 से प्रारम्भ होकर 27.04.2022 तक किया जा रहा है। इस कार्यशाला का विषय 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता' है। इस कार्यशाला में महाविद्यालय की शिक्षिकाएं और छात्राएं प्रतिभागी होंगीं। हमारा महाविद्यालय स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान है। इस संस्थान को स्थापित हुए 40 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। विगत 40 वर्षों में इस संस्थान ने कुरूक्षेत्र जिले के शहरी और ग्रामीण अंचल में बेटियों को शिक्षा के द्वारा सशक्त बनाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हुए शिक्षा और कीड़ा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। इसी वर्ष राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (National Assessment and Accreditation Council) ने इस महाविद्यालय को अपने मूल्यांकन और प्रत्यायन में प्रतिष्ठित 'ए' ग्रेड प्रदान किया है। इस पांचदिवसीय कार्यशाला में वैदिक दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान् अपने–अपने व्याख्यान देंगें। दिनांक 27 अप्रैल 2022 को कार्यशाला के समापन समारोह में मुख्य अतिथि माननीय आचार्य देवव्रत जी, महामहिम राज्यपाल, गुजरात पधारेंगें। महामहिम राज्यपाल जी वैदिक शिक्षा दर्शन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर विशेष प्रकाश डालेंगें। आमन्त्रित विद्वान् प्रो0 रूप किशोर शास्त्री (कुलपति, गुरूकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार), स्वामी विदेह योगी (संस्थापक, स्वस्ति पथ, कुरूक्षेत्र), प्रो0 सुरेन्द्र कुमार (प्रोफेसर संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द महिला महाविद्यालय, रोहतक) एवं डॉ0 वागीश आचार्य (प्राचार्य, आर्य गुरूकुल महाविद्यालय, एटा) रहेंगें।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री नायब सिंह सैनी, सांसद, कुरूक्षेत्र तथा प्रवर अतिथि श्री सुभाष सुधा, विधायक, कुरूक्षेत्र रहेंगें। महाविद्यालय समय–समय पर अपनी छात्राओं और शिक्षक तथा गैर–शिक्षक वर्ग के लिए इस प्रकार की शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित करता रहता है।

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र
प्रैस–नोट

दिनांक 22.04.2022

आज दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरूक्षेत्र में आई0 क्यू0 ए0 सी0 एवं आर्य युवती परिषद के संयुक्त तत्वाधान में पांच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला, 'वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता' का शुभारंभ मुख्य अतिथि प्रो0 रूपकिशोर शास्त्री, कुलपति, गुरूकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार के द्वारा मंत्रोच्चारण के बीच दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इस अवसर पर इनके साथ महाविद्यालय प्रबंधक समिति के प्रधान डॉ0 राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ0 श्वेतांक, संयुक्त कुलसचिव, गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार, प्राचार्या डॉ0 विजेश्वरी शर्मा, कार्यक्रम की संयोजिकाएं श्रीमती अंजु चावला व डॉ0 सुमन राजन उपस्थित रहे।

आर्य युवती परिषद् की संयोजिका डॉ0 सुमन राजन ने मुख्य अतिथि एवं मंचासीन विद्वानों का औपचारिक परिचय दिया। प्रबंधक समिति के प्रधान डॉ0 राजेन्द्र विद्यालंकार व प्राचार्या महोदया ने मुख्य अतिथियों को पौधा भेंट करके स्वागत किया। मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए डॉ0 राजेन्द्र विद्यालंकार ने कहा कि प्रो0 रूपकिशोर जी ने पांच वर्षों तक 'महर्षि सान्दीपनी राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन' में सचिव पद पर रहते हुए वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होंने 'व्यक्ति के प्रति उदार ओर सिद्धांत के प्रति दृढ़' रहते हुए वेद शास्त्रों के ज्ञाता के रूप में निरन्तर कार्य किया और गुरूकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार को नई ऊंचाईयाँ प्रदान की हैं।

कार्यशाला के प्रथम दिन के व्याख्याता के रूप में अपने विचार रखते हुए प्रो0 रूपकिशोर ने सभी स्टाफ सदस्यों ओर छात्राओं को दयानंद महिला महाविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थान से जुड़े होने पर बधाई दी और महाविद्यालय प्रांगण में छात्राओं एवं प्राध्यापिकाओं के आचरण और उनके व्यवहार में परिलक्षित होते हुए स्वामी दयानन्द शिक्षा दर्शन के लिए उन्हें साधुवाद दिया। उन्होंने कहा कि वैदिक शिक्षा दर्शन और स्वामी दयानंद सरस्वती एक दूसरे के पर्याय हैं। लगभग 2500 वर्षों के पश्चात् दयानंद सरस्वती जैसे तेजस्वी व क्रांतिकारी समाज सुधारक भारत में हुए, जिन्होंने वेदों के माध्यम से शिक्षा में नए दर्शन की स्थापना की।

नई शिक्षा नीति – 2020 के प्रारूप में दयानंद सरस्वती के वैदिक शिक्षा दर्शन का अहम् योगदान है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास के माध्यम से उन्होंने उस समय के भारत में 'समुचित शिक्षा नीति' का प्रणयन कर दिया था। उन्होंने कहा कि वैदिक दर्शन हमेशा ही माँ, पिता व गुरू के सम्मान पर बल देता है और समाज में उनकी महता को प्रदर्शित करता है। उन्होंने शतपथ ब्राह्मण के 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान पुरूषो वेदः' की व्याख्या करते हुए बताया कि व्यष्टि से समष्टि की ओर बढ़ने वाला ही पूर्ण मानव कहलाने का अधिकारी है।

प्राचार्या डॉ0 विजेश्वरी शर्मा ने मुख्य अतिथि का उनके प्रखर उद्बोधन के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि आपके बौद्धिक व्याख्यान से प्रतिभागियों को निश्चित रूप से लाभ मिलेगा जो उन्हें उनके भावी जीवन में हमेशा प्रेरणा देगा। प्राचार्या महोदया ने सभी अतिथियों को महाविद्यालय में उपलब्ध वैदिक वाड़मय व अन्य स्त्रोतों की जानकारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि अगर आधुनिक शिक्षा में वैदिक दर्शन को भी जोड़ दिया जाए तो समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों का दमन संभव है।

अन्त में महाविद्यालय प्रबन्धक समिति के प्रधान, प्राचार्या व संयोजिका श्रीमती अंजु चावला ने मुख्य अतिथियों को स्मृति चिहन् भेंट करके सम्मानित किया। इस कार्यशाला में महाविद्यालय की सभी प्राध्यापिकाएं, गैर शिक्षक वर्ग और स्नातकोतर कक्षाओं की छात्राएँ उपस्थित रहे। मंच संचालन संयोजिका डॉ0 सुमन राजन ने किया। महाविद्यालय के कुलगीत के साथ कार्यशाला के प्रथम दिवस का उदघाटन सत्र सम्पन्न हुआ।

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

प्रैस–नोट

दिनांक 23.04.2022

आइ0 क्यू0 ए0 सी0 एवं आर्य युवती परिषद के संयुक्त तत्त्वाधान में फैकल्टी डिवेल्पमैंट कार्यक्रम के अन्तर्गत दयानन्द महिला महाविद्यालय में चल रही पांच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला, 'वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता' के द्वितीय दिन स्वामी विदेह योगी, सस्थापक स्वस्ति पथ, कुरूक्षेत्र, व्याख्याता एवं मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित रहे।

महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 विजेश्वरी शर्मा ने मुख्य अतिथि को पौधा भेंट कर उनका स्वागत किया। अपने स्वागत सम्बोधन में उन्होंने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि स्वामी जी ने वेदों में पी0 एच0 डी0 करके भी समाज सेवा के पथ का चुनाव किया। अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार और युवा वर्ग के चरित्र–निर्माण के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने अपने जीवन–काल में अनेकों शिविरों का आयोजन कर युवा चरित्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अपने व्याख्यान में स्वामी विदेह योगी जी ने वर्तमान परिपेक्ष्य की विस्तार से व्याख्या की। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हमसे दो बड़ी भूलें हुई, कि हमनें अंग्रेजों द्वारा प्रचलित शिक्षा प्रणाली और नौकरशाही को अपनाया। जिसका नकारात्मक प्रभाव आज के युवा वर्ग और समाज पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

उन्होंने वैदिक शिक्षा के अर्थ और स्वरूप पर प्रकाश डाला और उन्होंने कहा कि भाषा की दृष्टि से गुलाम होना व्यक्ति को स्वतन्त्र चिन्तन नहीं करने देता। अपनी मातृभाषा के शब्दों की सबसे बड़ी विशेषता है कि उसके साथ हमारी संस्कृति व परम्परा का जुड़ाव होता है। यदि भाषा में बदलाव होता है तो उसके साथ ही हमारी संस्कृति व परम्परा में भी परिवर्तन होता है। अपने वक्तव्य में उन्होंने प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति पर भी प्रकाश डाला। प्राचीन शिक्षा का मुख्य आधार चरित्र–निर्माण, राष्ट्रभक्ति, सदाचार, आचरण की सभ्यता और सुसंस्कृत बनाना था, जबकि वर्तमान शिक्षा पद्धति केवल धन केन्द्रित हो गई है। इसने मनुष्य के शारीरिक और बौद्धिक विकास को अवरूद्ध कर दिया है। अपनी

मातृभाषा का सम्मान, अपनी संस्कृति से गहरे रूप से जुड़ाव, उच्च चरित्र–निर्माण का प्रयास करने के आह्वान के साथ उन्होंने अपना वक्तव्य समाप्त किया।

मुख्य व्याख्याता स्वामी विदेह स्वामी योगी का आभार अभिव्यक्त करते हुए संयोजिका श्रीमती अंजु चावला ने कहा कि आज के सारगर्भित वक्तव्य के माध्यम से स्वामी जी ने प्राचीन व आधुनिक शिक्षा पद्धति के सभी पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला। अन्त में महाविद्यालय प्राचार्या व संयोजिकाओं ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट करके सम्मानित किया।

आज कार्यशाला में महाविद्यालय की सभी प्राध्यापिकाएं, गैर शिक्षक वर्ग और स्नातकोतर कक्षाओं की छात्राएँ उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ0 आरती अग्रवाल ने किया। महाविद्यालय के कुलगीत के साथ कार्यशाला के द्वितीय दिवस का समापन हुआ।

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र
प्रैस–नोट

दिनांक 25.04.2022

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरूक्षेत्र में आयोजित की जा रही पांच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला, 'वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता' के तीसरे दिन मुख्य अतिथि के रूप में प्रो0 सुरेन्द्र कुमार, प्रोफेसर संस्कृत विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक उपस्थित रहे।

महाविद्यालय प्रबंध समिति के प्रधान डॉ0 राजेन्द्र विद्यालंकार व प्राचार्या डॉ0 विजेश्वरी शर्मा ने मुख्य अतिथि को पर्यावरण संरक्षण का प्रतीक पौधा भेंट कर उनका स्वागत किया। उनका औपचारिक परिचय देते हुए माननीय राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने बताया कि प्रो0 सुरेन्द्र कुमार पिछले 32 वर्षों से अध्यापन से जुड़े हुए हैं। इन्होंने अपनी सम्पूर्ण शिक्षा गुरूकुलीय पद्धति से करते हुए गुरूकुल एटा, गुरूकुल ज्वालापुर एवं गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार से अध्ययन किया। वेद, दर्शन और व्याकरण का संगम आचार्य सुरेन्द्र कुमार में देखा जा सकता है।

अपना वक्तव्य रखते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि मानव को सभ्य मनुष्य के रूप में विकसित होने में वैदिक शिक्षा दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान है। यह मनुष्य के जन्म–जन्मांतर के कुसंस्कारों के प्रभावों को समाप्त करके उसे सुसंस्कृत बना देता है। उन्होंने अध्ययन की सार्थकता बताते हुए कहा कि मनुष्य को हमेशा अध्ययनशील रहना चाहिए, हो सकता है कि अध्ययन सभी को विद्वान् न बना सके परन्तु सभी को सभ्य अवश्य बना देता है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि अध्ययन केवल अर्थ आधारित न होकर मानवता और मूल्य आधारित होना चाहिए।

उन्होंने वैदिक शिक्षा दर्शन के अनुसार 'सर्वांगीण विकास' अवधारणा की विस्तार से व्याख्या की। आत्मा, मन और बुद्धि का समायोजन होने पर ही सर्वांगीण विकास हो सकता है। प्राचीन काल में इसी दृष्टिकोण से अध्ययन–अध्यापन होता था, परन्तु आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में इन तत्वों की उपेक्षा की गई है। मानव जीवन में सुख, सामजस्य, विकास और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए इस युग में वैदिक शिक्षा दर्शन की अत्यंत आवश्यकता है।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 विजेश्वरी शर्मा ने मुख्य अतिथि, सभी उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों और श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि आज के सत्र में मुख्य वक्ता ने शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य एवं समाज में उसके महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

अन्त मे महाविद्यालय प्रधान, प्राचार्या व संयोजिकाओं ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट करके सम्मानित किया।

आज कार्यशाला में महाविद्यालय की सभी प्राध्यापिकाएं, गैर शिक्षक वर्ग और विज्ञान एवं कला संकाय की छात्राएँ उपस्थित रही। मंच संचालन डॉ0 रीजा ने किया। महाविद्यालय के कुलगीत के साथ कार्यशाला के तृतीय दिवस का समापन हुआ।

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र
प्रैस–नोट

दिनांक 26.04.2022

आई0 क्यू0 ए0 सी0 और आर्य युवती परिषद् के संयुक्त तत्वाधान में फैकल्टी डैवल्पमेंट प्रोग्राम के अर्न्तगत दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र में चल रही पंच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला, 'वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता' के चौथे दिन आयोजित ऑनलाइन व्याख्यान में डॉ0 वागीश आचार्य जी (प्राचार्य, आर्य गुरूकुल महाविद्यालय, एटा) मुख्यातिथि व मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

प्रबन्धक समिति के माननीय प्रधान जी ने मुख्यातिथि का स्वागत एवं परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि डॉ0 वागीश आचार्य जी सौम्य व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति रहे हैं। देश–विदेश में लोकप्रिय रहे आचार्य जी अपनी वाणी की कला से सुनने वाले श्रोताओं को बांध लेते हैं। उनके तर्कों और चिन्तन में अत्यधिक स्पष्टता एवं सदैव मार्गदर्शन विद्यमान रहता है। उन्होंने वैदिक शिक्षा, वैदिक दर्शन का गम्भीर चिन्तन किया है, सरल व्यक्तित्व के धनी ऐसे विद्वान् आज की कार्यशाला में अपना वैदुष्यपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत करेंगें।

आज की कार्यशाला में आयोजित ऑनलाइन व्याख्यान में मुख्य वक्ता ने कहा कि वेदों में ईश्वरीय ज्ञान व्याप्त है। मनुष्य के अतिरिक्त सृष्टि के सभी जीवों को जन्म से ही ज्ञान प्राप्त हो जाता है, परन्तु मनुष्य परम्परागत पद्धति से ही इस ज्ञान को ग्रहण कर पाता है। मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए विद्या रूपी उपक्रम की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य को मनुष्य बनाने में माता, पिता, गुरू, तीनों का सबसे बड़ा ऋण माना जाता है। वैदिक शिक्षा दर्शन शरीर, बुद्धि, मन व आत्मा इन चारों स्तरों पर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करता है। वैदिक संस्कारों का मनुष्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। आज की शिक्षा पद्धति का मन को सुसंस्कृत बनाने में कोई योगदान नहीं है। वह एकांगी है, इसलिए मनुष्य का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। वेदों में प्रतिपादित विषय ज्ञान, धर्म, उपासना हैं। उन्होंने कहा कि धर्म का विधान पशु पक्षियों के लिए न होकर मनुष्य के लिए है। वैदिक शिक्षा पद्धति सत्य–असत्य, उचित–अनुचित के भेद का ज्ञान मनुष्य को प्रदान करती है और संवेदनाओं का विकास करती है। व्यक्ति के ज्ञानवान

होने का अर्थ है नीर–क्षीर विवेक से सत्य–असत्य का निर्धारण करना। ये ज्ञान वैदिक दर्शन के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 विजेश्वरी शर्मा ने मुख्य वक्ता का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि माननीय आचार्य जी ने अपने वक्तव्य के माध्यम से सभी प्रातिभागियों को वैदिक शिक्षा दर्शन के प्रति उत्सुक करने के साथ–साथ उसे जीवन में धारण करने के लिए प्रेरित किया है। आधुनिक शिक्षा ने जीवन से जुड़े उन सभी महत्वपूर्ण वैदिक संस्कारों को पीछे छोड़ दिया है, जो मानव जीवन का सर्वांगीण विकास करते हैं। आज सभी भौतिक विकास के पीछे दौड़ रहे हैं जिससे मनुष्य का आत्मिक विकास बाधित हो गया है। हम केवल मशीन बन गए हैं और संवेदनशीलता को भूल गए हैं। यही कारण है कि विश्व में अशांति का वातावरण बढ़ता जा रहा है। अन्त में प्राचार्या महोदया ने उपस्थित सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया।

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र
प्रैस–नोट

दिनांक 27.04.2022

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरूक्षेत्र में आयोजित पांच दिवसीय शैक्षिक कार्यशाला के समापन समारोह में आचार्य देवव्रत जी, महामहिम राज्यपाल, गुजरात मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। छात्राओं द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ महामहिम राज्यपाल, गुजरात ने दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ किया। इन गौरवमयी क्षणों में श्री नायब सिंह सैनी, सांसद कुरूक्षेत्र, श्री सुभाष सुधा, विधायक थानेसर, डॉ0 राजेन्द्र विद्यालंकार, प्रधान, महाविद्यालय प्रबंधक समिति, श्री राम स्वरूप नैन, महासचिव, महाविद्यालय प्रबंधक समिति, डॉ0 विजेश्वरी शर्मा, प्राचार्या महाविद्यालय, डॉ0 सुमन राजन, संयोजिका, आर्य युवती परिषद् और श्रीमती अंजु चावला, संयोजिका, आई0 क्यू ए0 सी0 उपस्थित रहे।

महाविद्यालय की संगीत विभाग की छात्राओं ने स्वागत गीत के माध्यम से मुख्य अतिथि का स्वागत किया। महाविद्यालय प्रबंधक समिति के प्रधान डॉ0 राजेन्द्र विद्यालंकार ने मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों का परिचय सदन के सामने प्रस्तुत करते हुए स्वागत किया। उन्होंने कहा कि माननीय आचार्य देवव्रत जी ने जैविक खेती उत्पादन का प्रणयन किया जिसके परिणाम स्वरूप प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने वर्तमान बजट में भी जैविक कृषि के लिए अंश निर्धारित किया है। ऐसी विलक्षण प्रतिभा को अपने बीच पा कर महाविद्यालय परिवार अपने आप को गौरवमयी और सौभाग्यशाली मान रहा है।

डॉ0 राजेन्द्र विद्याालंकार ने सांसद नायब सिंह सैनी और विधायक सुभाष सुधा व अन्य सभी गणमान्य जनों का हार्दिक अभिनन्दन और स्वागत किया।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए कार्यशाला संयोजिका डॉ0 सुमन राजन ने पंचदिवसीय कार्यशाला, 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता' के बीते चारों दिनों का संक्षिप्त कार्यशाला विवरण प्रस्तुत करते हुए सभी चारों व्याख्याताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए व्याख्यानों का सार सदन के सामने रखा।

कार्यशाला के सन्दर्भ में सम्बोधित करते हुए विधायक सुभाष सुधा ने कहा कि वैदिक शिक्षा से प्राचीन कोई शिक्षा नहीं थी, परन्तु वर्तमान में उसकी उपयोगिता और महत्व को

भूला दिया है। उन्होंने दयानंद महिला महाविद्यालय को नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त करने पर बधाई और शुभकामनाएं दी।

कुरूक्षेत्र के सांसद नायब सिंह सैनी ने अपने सम्बोधन में कहा कि वैदिक शिक्षा पद्धति ने गुरू–शिष्य की पवित्र परम्परा को जन्म दिया था, जिसे आचार्य देवव्रत जी अपने जीवंत प्रयासों से प्रचारित–प्रसारित कर रहे हैं। वैदिक शिक्षा का मूल आधार संस्कार और मानवीय मूल्य होते हैं, जिनका पालन करके कोई भी समाज सभ्य बन सकता है, इसलिए वैदिक शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी।

मुख्य अतिथि, माननीय देवव्रत जी ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए दयानन्द महिला महाविद्यालय को 40 वर्षों की गौरवशाली यात्रा के लिए बधाई दी। इस महाविद्यालय की स्थापना करके इसके संस्थापकों ने कुरूक्षेत्र जिले की शहरी व ग्रामीण परिवेश की बेटियों को शिक्षित करने का महत्वपूर्ण अनुष्ठान करके पवित्र यज्ञ किया है।

प्रतिभाशाली छात्राओं ने अपनी उपलब्धियों से इस महाविद्यालय की गरिमा को चार चाँद लगाए हैं। वैदिक शिक्षा दर्शन विषय पर चल रही कार्यशाला का प्रतिभागी होने पर सभी छात्राओं को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि दयानंद महिला महाविद्यालय अपनी परम्परा के अनुरूप छात्राओं को संस्कारित करने के साथ–साथ उनके सर्वांगीण विकास पर बल देता है। भोगवादी संस्कृति के पनपने के कारण मूल्य और संस्कार उपेक्षित होते चले गए हैं, जिससे वास्तविक मानव का विकास रूक गया है। इसी का परिणाम समाज में फैली बुराईयों और कुरीतियों के रूप में हमारे सामने है। वैश्विक स्तर पर अशांति और युद्ध के माहौल से असुरक्षा की भावना प्रबल है। उन्होंने लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति की आलोचना करते हुए कहा कि इसने भारत की स्थिति को बेहतर बनाने की अपेक्षा बदतर किया है। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के माध्यम से यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस स्थिति में परिवर्तन करने की चुनौती को स्वीकार किया है, उन्होंने भारत को सुखद भविष्य की ओर ले जाने का संकल्प लिया है।

उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी दयानंद सरस्वती व आर्य समाज के योगदान पर भी प्रकाश डाला। भारतीय वैदिक दर्शन सर्वे भवन्तु सुखिनः और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को प्रसारित करता है।

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति प्रधान एवं प्राचार्या महोदया ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट किया। महाविद्यालय प्रबन्ध समिति महासचिव एवं संयोजिका डॉ0 सुमन राजन ने सांसद कुरूक्षेत्र को स्मृति चिन्ह भेंट किया। महाविद्यालय प्रबन्ध समिति महासचिव एवं संयोजिका श्रीमती अंजु चावला ने विधायक कुरूक्षेत्र को स्मृति चिन्ह भेंट किया। अन्त में महाविद्यालय की प्राचार्या महोदया ने आज के कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं गणमान्य अतिथियों, प्रबन्ध समिति, प्राध्यापिकाओं एवं छात्राओं का धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होने कहा कि माननीय आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात की गौरवमयी उपस्थिति, तेजोमयी व्यक्तित्व एवं ओजस्वी वक्तव्य के लिए महाविद्यालय परिवार हार्दिक आभार अभिव्यक्त करता है। उन्होंने मुख्य अतिथि को विश्वास दिलाते हुए कहा कि प्रदेश का अग्रणी यह महाविद्यालय भविष्य में भी नारी शिक्षा तथा उसके सर्वांगीण विकास के लिए अपना सर्वस्व देकर आगे बढ़ने का प्रयास करता रहेगा।

उन्होंने कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए आई0 क्यू0 ए0 सी0 एवं आर्य युवती परिषद् की संयोजिकाओं एवं सदस्याओं को बधाई दी। कार्यक्रम में मंच संचालन कार्यशाला संयोजिका श्रीमती अंजु चावला ने किया। राष्ट्रगान के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

अमर उजाला
28.04.2022

विचार

दयानंद महिला महाविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में बोले राज्यपाल आचार्य देवव्रत

भोगवादी संस्कृति से मूल्यों, संस्कारों की उपेक्षा

संवाद न्यूज एजेंसी

कुरुक्षेत्र। दयानंद महिला महाविद्यालय में आयोजित पांच दिवसीय शैक्षिक कार्यशाला का बुधवार को समापन हुआ। मुख्यातिथि गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत छात्राओं को संबोधित करते हुए भोगवादी संस्कृति के पनपने के कारण मूल्य और संस्कार उपेक्षित होते चले गए हैं, जिससे वास्तविक मानव का विकास रुक गया है। इसी का परिणाम समाज में फैली बुराइयां और कुरीतियों के रूप में हमारे सामने है।

उन्होंने कहा कि वैश्विक स्तर पर अशांति और युद्ध के माहौल से असुरक्षा की भावना प्रबल है। उन्होंने लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति की आलोचना करते हुए कहा कि इसने भारत की स्थिति को बेहतर

डीएन कॉलेज में आयोजित कार्यशाला में मंचासीन राज्यपाल आचार्य देवव्रत व अन्य।

बनाने की अपेक्षा बदतर किया है। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से प्रधानमंत्री ने इस स्थिति में परिवर्तन करने की चुनौती को स्वीकार किया है, उन्होंने भारत को सुखद भविष्य की ओर ले जाने का संकल्प लिया है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी दयानंद सरस्वती व आर्य समाज के योगदान पर भी प्रकाश डाला। सांसद नायब सिंह सैनी ने अपने संबोधन में कहा कि वैदिक शिक्षा पद्धति ने गुरु-शिष्य की पवित्र परंपरा को जन्म दिया था, जिसे आचार्य देवव्रत अपने जीवंत प्रयासों से प्रचारित-प्रसारित कर रहे हैं। वैदिक शिक्षा का मूल आधार संस्कार और मानवीय मूल्य होते हैं, जिनका पालन करके कोई भी समाज सभ्य बन सकता है, इसलिए वैदिक शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी।

विधायक सुभाष सुधा ने कहा कि वैदिक शिक्षा से प्राचीन कोई शिक्षा नहीं थी। वर्तमान में उसकी उपयोगिता और महत्व को भुला दिया गया है। कार्यशाला संयोजिका डॉ. सुमन राजन ने बीते चारों दिनों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. विजेश्वरी शर्मा ने कार्यशाला के आयोजन के लिए आईक्यूएसी एवं आर्य युवती परिषद की संयोजिकाओं एवं सदस्यों को बधाई दी। कार्यशाला का संचालन अंजू चावला ने किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से डॉ. राजेंद्र विद्यालंकार, राम स्वरूप नैन आदि उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण

28 अप्रैल, 2022

दयानंद महाविद्यालय छात्राओं को बना रहा है संस्कारवान : देवव्रत

शैक्षिक कार्यशाला के समापन पर पहुंचे गुजरात के राज्यपाल

जागरण संवाददाता, कुरुक्षेत्र : गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि दयानंद महिला महाविद्यालय अपनी परंपरा अनुरूप छात्राओं को संस्कारित कर उनका सर्वांगीण विकास कर रहा है। भोगवादी संस्कृति के पनपने के कारण मूल्य और संस्कार उपेक्षित होते चले गए हैं, जिससे वास्तविक मानव का विकास रुक गया है। वह बुधवार को दयानंद महिला महाविद्यालय में आयोजित शैक्षिक कार्यशाला के समापन अवसर पर बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि संस्कार उपेक्षित होने का परिणाम समाज में फैली बुराइयों और कुरीतियों के रूप में हमारे सामने है। वैश्विक स्तर पर अशांति और युद्ध के माहौल से असुरक्षा की भावना प्रबल है।

उन्होंने कहा कि लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति ने भारत की स्थिति को बेहतर बनाने की अपेक्षा बदतर किया है। महाविद्यालय प्रबंधक समिति के प्रधान डा. राजेंद्र विद्यालंकार ने कहा कि राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने जैविक खेती उत्पादन का प्रणयन किया। देश के वर्तमान बजट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश पर जैविक कृषि के लिए अंश निर्धारित किया है।

दयानंद महिला महाविद्यालय में कार्यशाला में पहुंचे गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत को पुष्पगुच्छ भेंट करते सांसद नायब सिंह सैनी व विधायक सुभाष सुधा। • सौ. संस्थान

वैदिक शिक्षा पद्धति ने गुरु-शिष्य की परंपरा को जन्म दिया : नायब सैनी

सांसद नायब सिंह सैनी ने कहा कि वैदिक शिक्षा पद्धति ने गुरु-शिष्य की पवित्र परंपरा को जन्म दिया था। वैदिक शिक्षा का मूल आधार संस्कार और मानवीय मूल्य होते हैं। विधायक सुभाष सुधा ने कहा कि वैदिक शिक्षा से प्राचीन कोई शिक्षा नहीं थी। समाज ने उसकी उपयोगिता और महत्व को भूला दिया है।

विधायक सुधा को स्मृति चिह्न किया भेंट

कार्यशाला संयोजिका डा. सुमन राजन ने कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण दिया। महाविद्यालय प्रबंध समिति महासचिव एवं संयोजिका अंजु चावला ने थानेसर विधायक को स्मृति चिह्न प्रदान किया। इस मौके पर महाविद्यालय प्रबंधक समिति के महासचिव राम स्वरूप नैन, प्राचार्या डा. विजेश्वरी शर्मा, जगदीश आर्य, डा. रामेंद्र सिंह मौजूद रहे।

पंजाब केसरी
28 अप्रैल 2022

दयानंद महिला महाविद्यालय में आयोजित 5 दिवसीय शैक्षिक कार्यशाला सम्पन्न

कुरुक्षेत्र, 27 अप्रैल (विनोद अरोड़ा) : दयानन्द महिला महाविद्यालय में आयोजित पांच दिवसीय शैक्षिक कार्यशाला के समापन समारोह में आचार्य देवव्रत, महामहिम राज्यपाल, गुजरात मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। छात्राओं द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ महामहिम राज्यपाल, गुजरात ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ किया।

इन गौरवमयी क्षणों में नायब सिंह सैनी सांसद कुरुक्षेत्र, सुभाष सुधा विधायक थानेसर, डा. राजेन्द्र विद्यालंकार प्रधान महाविद्यालय प्रबंधक समिति राम स्वरूप नैन महासचिव, महाविद्यालय प्रबंधक समिति, डा. विजेश्वरी शर्मा प्राचार्या महाविद्यालय, डा. सुमन राजन संयोजिका आर्य युवती परिषद् और अंजु चावला संयोजिका आई.क्यू.ए.सी. उपस्थित रहे। महाविद्यालय प्रबंधक समिति के प्रधान डा. राजेन्द्र विद्यालंकार ने मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों का परिचय सदन के सामने प्रस्तुत करते हुए स्वागत किया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए कार्यशाला संयोजिका डा. सुमन राजन ने पंचदिवसीय कार्यशाला, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता के बीते चारों दिनों का संक्षिप्त कार्यशाला विवरण प्रस्तुत करते हुए सभी चारों व्याख्याताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए व्याख्यानों का सार सदन के सामने रखा। कार्यशाला के सन्दर्भ में सम्बोधित करते हुए विधायक सुभाष सुधा ने कहा कि वैदिक शिक्षा से प्राचीन कोई शिक्षा नहीं थी, परन्तु वर्तमान में उसकी उपयोगिता और महत्व को भूला दिया है। कुरुक्षेत्र के सांसद नायब सिंह सैनी ने अपने सम्बोधन में कहा कि वैदिक शिक्षा पद्धति ने गुरू-शिष्य की पवित्र परम्परा को जन्म दिया था, जिसे आचार्य देवव्रत जी अपने जीवंत प्रयासों से प्रचारित-प्रसारित कर रहे हैं। मुख्यातिथि आचार्य देवव्रत ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए दयानन्द महिला महाविद्यालय को 40 वर्षों की गौरवशाली यात्रा के लिए बधाई दी।

मुख्यातिथि का पुष्पगुच्छ के साथ स्वागत करते सांसद, विधायक व प्रबंध समिति के सदस्य। (अरोड़ा)

इस महाविद्यालय की स्थापना करके इसके संस्थापकों ने कुरूक्षेत्र जिले की शहरी व ग्रामीण परिवेश की बेटियों को शिक्षित करने का महत्वपूर्ण अनुष्ठान करके पवित्र यज्ञ किया है। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस स्थिति में परिवर्तन करने की चुनौती को स्वीकार किया है, उन्होंने भारत को सुखद भविष्य की ओर ले जाने का संकल्प लिया है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी दयानंद सरस्वती व आर्य समाज के योगदान पर भी प्रकाश डाला। भारतीय वैदिक दर्शन सर्वे भवन्तु सुखिनः और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को प्रसारित करता है। महाविद्यालय प्रबन्ध समिति द्वारा अतिथिओं को स्मृति चिन्ह भेंट किया। कार्यक्रम में मंच संचालन अंजु चावला ने किया।

अमर उजाला
27.04.2022

वेदों में व्याप्त है ईश्वरीय ज्ञान : डॉ. वागीश आचार्य

डीएन कॉलेज में आयोजित कार्यशाला में हिस्सा लेती शिक्षिकाएं व छात्राएं। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

कुरुक्षेत्र। आईक्यूएसी और आर्य युवती परिषद के संयुक्त तत्वाधान में फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के अंतर्गत दयानंद महिला महाविद्यालय चल रही पांच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला में चौथे दिन आयोजित ऑनलाइन व्याख्यान में आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, एटा के प्राचार्य डॉ. वागीश आचार्य में मुख्य वक्ता के तौर पर शिरकत की।

उन्होंने कहा कि वेदों में ईश्वरीय ज्ञान व्याप्त है। मनुष्य के अतिरिक्त सृष्टि के सभी जीवों को जन्म से ही ज्ञान प्राप्त हो जाता है, लेकिन मनुष्य परंपरागत पद्धति से ही इस ज्ञान को ग्रहण कर पाता है।

उन्होंने कहा कि मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए विद्या रूपी उपक्रम की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य को मनुष्य बनाने में माता, पिता, गुरु, तीनों का सबसे बड़ा ऋण माना जाता है। वैदिक संस्कारों का मनुष्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उन्होंने कहा कि धर्म का विधान पशु पक्षियों के लिए न होकर मनुष्य के लिए है। वैदिक शिक्षा पद्धति सत्य-असत्य, उचित-अनुचित के भेद का ज्ञान मनुष्य को प्रदान करती है और संवेदनाओं का विकास करती है।

प्राचार्य डॉ. विजेश्वरी शर्मा ने कहा कि आधुनिक शिक्षा ने जीवन से जुड़े उन सभी महत्वपूर्ण वैदिक संस्कारों को पीछे छोड़ दिया है, जो मानव जीवन का सर्वांगीण विकास करते हैं। आज सभी भौतिक विकास के पीछे दौड़ रहे हैं, जिससे मनुष्य का आत्मिक विकास बाधित हो गया है। हम केवल मशीन बन गए हैं और संवेदनशीलता को भूल गए हैं। यही कारण है कि विश्व में अशांति का वातावरण बढ़ता जा रहा है।

पंजाब केसरी
27 अप्रैल 2022

वैदिक संस्कारों का मनुष्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान : डा. वागीश

कुरुक्षेत्र, 26 अप्रैल (विनोद अरोड़ा) : आई.क्यू.ए.सी. और आर्य युवती परिषद् के संयुक्त तत्वाधान में फैकल्टी डैवल्पमेंट प्रोग्राम के अन्तर्गत दयानन्द महिला महाविद्यालय में चल रहो पंच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला, वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता के चौथे दिन आयोजित ऑनलाइन व्याख्यान में डा. वागीश आचार्य (प्राचार्य, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, एटा) मुख्यातिथि व मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। प्रबन्धक समिति के प्रधान ने मुख्यातिथि का स्वागत एवं परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि डा. वागीश आचार्य जो सौम्य व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति रहे हैं।

देश-विदेश में लोकप्रिय रहे आचार्य अपनी वाणी की कला से सुनने वाले श्रोताओं को बांध लेते हैं। उनके तर्कों और चिन्तन में अत्यधिक स्पष्टता एवं सदैव मार्गदर्शन विद्यमान रहता है। उन्होंने वैदिक शिक्षा, वैदिक दर्शन का गम्भीर चिन्तन किया है, सरल व्यक्तित्व के धनी ऐसे विद्वान आज की कार्यशाला में अपना वैदुष्यपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत करेंगे। आज की कार्यशाला में आयोजित ऑनलाइन व्याख्यान में मुख्य वक्ता ने कहा कि वेदों में ईश्वरीय ज्ञान व्याप्त है। मनुष्य के अतिरिक्त सृष्टि के सभी जीवों को जन्म से ही ज्ञान प्राप्त हो जाता है, परन्तु मनुष्य परम्परागत पद्धति से ही इस ज्ञान को ग्रहण कर पाता है।

वैदिक शिक्षा दर्शन शरीर, बुद्धि, मन व आत्मा इन चारों स्तरों पर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करता है। वैदिक संस्कारों का मनुष्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान

कार्यक्रम में भाग लेती अध्यापिकाएं व छात्राएं। (अरोड़ा)

होता है। आज की शिक्षा पद्धति का मन को सुसंस्कृत बनाने में कोई योगदान नहीं है। वह एकांगी है, इसलिए मनुष्य का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। वेदों में प्रतिपादित विषय ज्ञान, धर्म, उपासना हैं। उन्होंने कहा कि धर्म का विधान पशु पक्षियों के लिए न होकर मनुष्य के लिए है। वैदिक शिक्षा पद्धति सत्य-असत्य, उचित-अनुचित के भेद का ज्ञान मनुष्य को प्रदान करती है।

महाविद्यालय प्राचार्या डा. विजेश्वरी शर्मा ने मुख्य वक्ता का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि आचार्य ने अपने वक्तव्य के माध्यम से सभी प्रतिभागियों को वैदिक शिक्षा दर्शन के प्रति उत्सुक करने के साथ-साथ उसे जीवन में धारण करने के लिए प्रेरित किया है। आधुनिक शिक्षा ने जीवन से जुड़े उन सभी महत्वपूर्ण वैदिक संस्कारों को पीछे छोड़ दिया है, जो मानव जीवन का सर्वांगीण विकास करते हैं। आज सभी भौतिक विकास के पीछे दौड़ रहे हैं जिससे मनुष्य का आत्मिक विकास बाधित हो गया है।

पंजाब केसरी
26 अप्रैल 2022

अध्ययन केवल अर्थ आधारित न होकर मानवता और मूल्य आधारित होना चाहिए : प्रो. सुरेन्द्र

कुरुक्षेत्र, 25 अप्रैल (विनोद अरोड़ा) : दयानन्द महिला महाविद्यालय में आयोजित की जा रही पांच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला, वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. सुरेन्द्र कुमार, प्रोफेसर संस्कृत विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक उपस्थित रहे।

महाविद्यालय प्रबंध समिति के प्रधान डा. राजेन्द्र विद्यालंकार व प्राचार्या डा. विज़ेश्वरी शर्मा ने मुख्य अतिथि को पर्यावरण संरक्षण का प्रतीक पौधा भेंट कर उनका स्वागत किया। उनका औपचारिक परिचय देते हुए माननीय राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने बताया कि प्रो. सुरेन्द्र कुमार पिछले 32 वर्षों से अध्यापन से जुड़े हुए हैं।

वेद, दर्शन और व्याकरण का संगम आचार्य सुरेन्द्र कुमार में देखा जा सकता है। अपना वक्तव्य रखते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि मानव को सभ्य मनुष्य के रूप में विकसित होने में वैदिक शिक्षा दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान है।

यह मनुष्य के जन्म-जन्मांतर के कुसंस्कारों के प्रभावों को समाप्त करके उसे सुसंस्कृत बना देता है। उन्होंने अध्ययन की सार्थकता बताते हुए कहा कि मनुष्य को हमेशा अध्ययनशील रहना चाहिए, हो सकता है कि अध्ययन सभी को विद्वान न बना सके परन्तु सभी को सभ्य अवश्य बना देता है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि अध्ययन केवल अर्थ आधारित न होकर मानवता और मूल्य आधारित होना चाहिए। उन्होंने वैदिक शिक्षा दर्शन के अनुसार सर्वांगीण विकास अवधारणा की विस्तार से व्याख्या की।

आत्मा, मन और बुद्धि का समायोजन होने पर ही सर्वांगीण विकास हो सकता है। मानव जीवन में सुख, सामजस्य, विकास और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए इस युग में वैदिक शिक्षा दर्शन की अत्यंत आवश्यकता है। महाविद्यालय की प्राचार्या डा. विजेश्वरी शर्मा ने मुख्य अतिथि, सभी उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों और श्रोताओं का आभार व्यक्त किया।

अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि आज के सत्र में मुख्य वक्ता ने शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य एवं समाज में उसके महश्व पर विस्तार से प्रकाश डाला है। अन्त में महाविद्यालय प्रधान, प्राचार्या व संयोजिकाओं ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट करके सम्मानित किया। मंच संचालन डा. रीजा ने किया। महाविद्यालय के कुलगीत के साथ कार्यशाला के तृतीय दिवस का समापन हुआ।

अमर उजाला
24.04.2022

आयोजन

दयानंद महिला महाविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में स्वामी विदेह योगी ने दिया व्याख्यान

'भाषा की गुलामी नहीं करने देती स्वतंत्र चिंतन'

संवाद न्यूज एजेंसी

कुरुक्षेत्र। दयानंद महिला महाविद्यालय में चल रही पांच दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन शनिवार को स्वस्ति पथ के संस्थापक स्वामी विदेह योगी ने बतौर मुख्य वक्ता शिरकत की। राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता विषय पर आयोजित यह कार्यशाला आईक्यूएसी एवं आर्य युवती परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई है।

स्वामी विदेह योगी ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य की विस्तार से व्याख्या करते हुए कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हमसे दो बड़ी भूल हुई है कि हमने अंग्रेजों की शिक्षा प्रणाली और नौकरशाही को अपनाया। इसका नकारात्मक प्रभाव आज की युवा पीढ़ी और समाज पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। उन्होंने वैदिक शिक्षा के अर्थ और स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भाषा की दृष्टि से गुलाम होना व्यक्ति को स्वतंत्र चिंतन नहीं करने देता। अपनी मातृभाषा के शब्दों की सबसे बड़ी विशेषता है कि उसके साथ हमारी संस्कृति व परंपरा का जुड़ाव होता है।

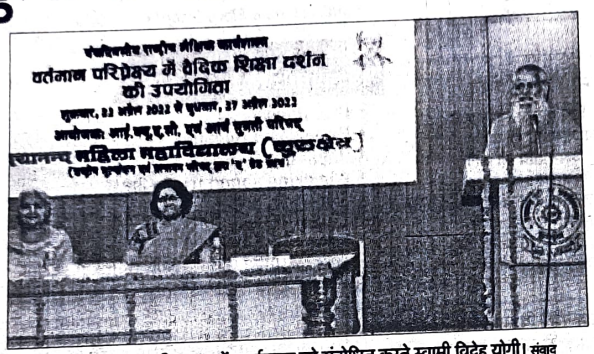

दयानंद महिला महाविद्यालय में कार्यशाला को संबोधित करते स्वामी विदेह योगी। संवाद

उन्होंने कहा कि अगर भाषा में बदलाव होता है तो उसके साथ ही हमारी संस्कृति व परंपरा में भी परिवर्तन होता है। उन्होंने प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति पर भी प्रकाश डाला। प्राचीन शिक्षा का मुख्य आधार चरित्र निर्माण, राष्ट्रभक्ति, सदाचार, आचरण की सभ्यता और संस्कृति बनाना था, जबकि वर्तमान शिक्षा पद्धति केवल धन केंद्रित हो गई है।

प्राचार्य डॉ. विजेश्वरी शर्मा ने बताया कि स्वामी विदेह योगी ने वेदों में पीएचडी करके भी समाज सेवा के पथ का चुनाव किया है और अपना संपूर्ण जीवन वैदिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार और युवा के चरित्र निर्माण के लिए समर्पित कर दिया है। कार्यक्रम संयोजक अंजू चावला ने कहा कि स्वामी विदेह ने प्राचीन व आधुनिक शिक्षा पद्धति के सभी पक्षों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ. आरती अग्रवाल आदि उपस्थित रहीं।

पंजाब केसरी
24 अप्रैल 2022

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते मुख्यातिथि। (अरोड़ा)

दयानंद महिला महाविद्यालय में 5 दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला का शुभारम्भ

कुरुक्षेत्र (विनोद अरोड़ा): दयानन्द महिला महाविद्यालय में आई.क्यू.ए.सी. एवं आर्य युवती परिषद के संयुक्त तत्वाधान में पांच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता का शुभारंभ मुख्यातिथि प्रो. रूपकिशोर शास्त्री, द्वारा मंत्रोच्चारण के बीच दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इस अवसर पर इनके साथ महाविद्यालय प्रबंधक समिति के प्रधान डा. राजेन्द्र विद्यालंकार, डा. श्वेतांक, प्राचार्या डा. विजेश्वरी शर्मा, कार्यक्रम की संयोजिकाएं अंजु चावला व डा. सुमन राजन उपस्थित रहे। आर्य युवती परिषद् की संयोजिका डा. सुमन राजन ने मुख्यातिथि का परिचय दिया। मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए डा. राजेन्द्र विद्यालंकार ने कहा कि प्रो. रूपकिशोर ने पांच वर्षों तक महर्षि सान्दीपनी राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन में सचिव पद पर रहते हुए वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। कार्यशाला के प्रथम दिन अपने विचार रखते हुए प्रो. रूपकिशोर ने सभी स्टाफसदस्यों व छात्राओं को दयानंद महिला महाविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थान से जुड़े होने पर बधाई दी। नई शिक्षा नीति-2020 के प्रारूप में दयानंद सरस्वती के वैदिक शिक्षा दर्शन का अहम योगदान है। उन्होंने कहा कि वैदिक दर्शन हमेशा ही माँ, पिता व गुरू के सम्मान पर बल देता है और समाज में उनकी महता को प्रदर्शित करता है। प्राचार्या डा. विजेश्वरी शर्मा ने मुख्यातिथि का उनके प्रेरक उद्बोधन के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आपके बौद्धिक व्याख्यान से प्रतिभागियों को निश्चित रूप से लाभ मिलेगा जो उन्हें उनके भावी जीवन में हमेशा प्रेरणा देगा। अन्त में महाविद्यालय प्रबन्धक समिति के प्रधान, प्राचार्या व संयोजिका अंजु चावला ने मुख्यातिथि को स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया। मंच संचालन संयोजिका डा. सुमन राजन ने किया। इस मौके पर अध्यापिकाएं व छात्राएं मौजूद रहीं।

दैनिक जागरण
24 अप्रैल, 2022

अंग्रेजों की शिक्षा प्रणाली को अपनाना हमारी बड़ी भूल

कुरुक्षेत्र : दयानंद महिला महाविद्यालय में वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता विषय पर आयोजित कार्यशाला में संबोधित करते हुए स्वामी विदेह योगी ने कहा कि आजादी के बाद अंग्रेजों की शिक्षा प्रणाली और नौकरशाही अपनाना हमारी बड़ी भूल रही है। इसका नकारात्मक प्रभाव आज के युवा वर्ग और समाज पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। उन्होंने कहा कि भाषा की दृष्टि से गुलाम होना व्यक्ति को स्वतंत्र चिन्तन नहीं करने देता। अपनी मातृभाषा के शब्दों की सबसे बड़ी विशेषता है कि उसके साथ हमारी संस्कृति व परंपरा का जुड़ाव होता है।

अमर उजाला
23.04.2022

स्वामी दयानंद ने की शिक्षा में नए दर्शन की स्थापना

कुरुक्षेत्र। दयानंद महिला महाविद्यालय आईक्यूएसी एवं आर्य युवती परिषद के संयुक्त तत्वाधान में शुक्रवार को पांच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। वर्तमान परिपेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता विषय पर आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ गुरुकुल कांगड़ी सम विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति प्रो. रूपकिशोर शास्त्री ने किया। उन्होंने कहा कि वैदिक शिक्षा दर्शन और स्वामी दयानंद सरस्वती एक दूसरे के पर्याय हैं। दयानंद सरस्वती ने वेदों के माध्यम से शिक्षा में नए दर्शन की स्थापना की। नई शिक्षा नीति-2020 के प्रारूप में दयानंद सरस्वती के वैदिक शिक्षा दर्शन का अहम योगदान है। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास के माध्यम से उन्होंने उस समय के भारत में समुचित शिक्षा नीति का प्रणयन कर दिया था। उन्होंने कहा कि वैदिक दर्शन हमेशा ही माता, पिता व गुरु के सम्मान पर बल देता है और समाज में उनकी महता को प्रदर्शित करता है। कॉलेज की प्राचार्य डॉ. विजेश्वरी शर्मा ने कहा कि अगर आधुनिक शिक्षा में वैदिक दर्शन को भी जोड़ दिया जाए तो समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों का दमन संभव है। संवाद

दयानंद महिला महाविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में मंचासीन मुख्यातिथि प्रो. रूपकिशोर शास्त्री व अन्य।

दैनिक जागरण
23 अप्रैल, 2022

एक दूसरे के पर्याय हैं वैदिक शिक्षा दर्शन और स्वामी दयानंद

कुरुक्षेत्र : गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति प्रो. रूप किशोर शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती और वैदिक शिक्षा दर्शन एक दूसरे के पर्याय हैं। दयानंद सरस्वती ने क्रांतिकारी समाज सुधारक की भूमिका निभाते हुए वेदों के माध्यम से शिक्षा में नए दर्शन की स्थापना की। इस मौके पर गुरुकुल कांगड़ी के कुलसचिव डा. श्वेतांक सहित अन्य मौजूद रहे। (जास)

पंजाब केसरी
22 अप्रैल 2022

दयानन्द महिला महाविद्यालय में राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला आयोजित

कुरुक्षेत्र, 21 अप्रैल (विनोद अरोड़ा) : दयानन्द महिला महाविद्यालय की आर्य युवती परिषद् एवं आई.क्यू.ए.सी. द्वारा फैकल्टी डवैल्पमैंट प्रोग्राम के अंतर्गत पाँच दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला का आयोजन 22 अप्रैल से प्रारम्भ होकर 27 अप्रैल तक किया जा रहा है।

इस कार्यशाला का विषय वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता है। इस कार्यशाला में महाविद्यालय की शिक्षिकाएं और छात्राएं प्रतिभागी होंगीं। हमारा महाविद्यालय स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान है। इस संस्थान को स्थापित हुए 40 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। विगत 40 वर्षों में इस संस्थान ने कुरुक्षेत्र ज़िले के शहरी और ग्रामीण अंचल में बेटियों को शिक्षा के द्वारा सशक्त बनाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हुए शिक्षा और क्रीड़ा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित की हैं।

इसी वर्ष राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् नैशनल असैस्मैंट एण्ड एक्रेडेशन काउंसिल ने इस महाविद्यालय को अपने मूल्यांकन और प्रत्यायन में प्रतिष्ठित ए ग्रेड प्रदान किया है। इस पांच दिवसीय कार्यशाला में वैदिक दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान् अपने-अपने व्याख्यान देंगें।

आयोजित कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण

पंचदिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला

विषय: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता

समयावधि: 22-04-2022 से 27-04-2022 तक

विगत दिनों भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रस्ताव किया है। सारे देश में नूतन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) को लेकर विमर्श चल रहा है। भारत के राष्ट्रपति महोदय जी, भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी, माननीय शिक्षा मंत्री जी, अनेक राज्यों के माननीय राज्यपाल गण एवं मुख्यमंत्री गण, अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ विद्वान तथा उद्योग जगत से जुड़े हुए अनेक महानुभाव राष्ट्रीय स्तर पर नई शिक्षा नीति को लेकर चल रहे विमर्श में व्यापक भागीदारी कर रहे हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में भारतीय प्रतिभा का सम्पूर्ण दोहन कर उसे भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक विकास में लगाना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। विशेषज्ञ विद्वानों की राय में NEP 2020 इस महत्त्वपूर्ण आवश्यकता की आपूर्ति करने में सक्षम है। कौशल विकास के साथ-साथ मानवीय मूल्यों के संवर्धन का कार्य किसी भी शिक्षा नीति का अनिवार्य अंग होना ही चाहिए। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय की आई क्यू ए सी तथा आर्य युवती परिषद् ने निर्णय लिया है कि अपनी शिक्षिकाओं और चयनित छात्राओं को उस मूल्यबोध से अवगत करवाया जाए, जो वैदिक समाज में विद्यमान था। ऋग्वेद से लेकर महाभारत तक वितत वैदिक और लौकिक संस्कृत साहित्य में ऐसे अनेक गुणसूत्र विद्यमान है जो हमारी नई पीढ़ी को स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति और वैश्विक मानवता के प्रति उनके कर्तव्यों का तार्किक ढंग से ज्ञान बोध करवा सकते हैं। विशेष रूप से स्त्री शिक्षा को लेकर भारतीय समाज जिन अंतर्द्वन्द्वों से प्राय: दो चार होता रहता है उनके विषय में वैदिक शिक्षा दर्शन हमारे समाज का और हमारे नीति नियामकों का बहुत स्पष्ट मार्गदर्शन कर सकता है। प्रस्तुत कार्यशाला में समस्त वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य में विद्यमान ऐसे सभी प्रसंगों, वक्तव्यों और कथानकों का वैज्ञानिक और तार्किक ढ़ंग से संवाद के द्वारा परीक्षण एवं मूल्यांकन करवाया जाएगा। अपने-अपने क्षेत्रों से सम्बन्धित विभिन्न विषय विशेषज्ञ एवं विद्वान इस कार्यशाला में भागीदारी निभाएंगे।

पंचदिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यशाला

(22.04.2022 से 27.04.2022)

कार्यशाला–विवरण

महाविद्यालय की आर्य युवती परिषद् एवं आई० क्यू० ए० सी० द्वारा संकाय विकास कार्यक्रम के अतंर्गत आयोजित पंचदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण आपके समक्ष प्रस्तुत करती हूँ। इस कार्यशाला को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य छात्राओं और शिक्षक एवं गैर शिक्षक वर्ग को वैदिक शिक्षा दर्शन से परिचित करवाना है। कार्यशाला का विषयः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक शिक्षा दर्शन की उपयोगिता को लेकर 22 अप्रैल से प्रारम्भ कार्यशाला में प्रतिदिन प्रत्येक सत्र में वेदों के मर्मज्ञ विद्वत्जनों के व्याख्यान से शिक्षिकागण, गैर शिक्षक वर्ग एवं छात्राओं ने वैदिक शिक्षा दर्शन के महत्व और उपयोगिता के साथ–साथ समृद्ध वैदिक परम्परा की भी जानकारी प्राप्त की । व्याख्यान माला की इस कड़ी में क्रमशः प्रथम दिवस पर प्रो० रूपकिशोर शास्त्री (कुलपति, गुरूकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार) रहें। दूसरे दिवस पर स्वामी डॉ० विदेह योगी (संस्थापक, स्वस्ति पथ, कुरूक्षेत्र) रहें। तृतीय दिवस पर प्रो० सुरेन्द्र कुमार (प्रोफेसर, संस्कृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक) तथा चुतर्थ दिवस पर डॉ० वागीश आचार्य (प्राचार्य, आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय, एटा, उतर प्रदेश) रहें। इन सभी विद्वानों का समन्वित रूप से विद्वत्तापूर्ण मार्ग दर्शन हमें प्राप्त हुआ। सभी विद्ववत् जनों ने कार्यशाला के विषय से न्याय करते हुए वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों के संदर्भ में कहा कि वर्तमान समय में जब संसार का प्रत्येक व्यक्ति केवल और केवल Profession/Career oriented शिक्षा ग्रहण कर केवल उपाधिमात्र और अधिकतम अङक प्राप्त करके, बड़ा package हासिल करना चाहता है और शिक्षा के व्यापक अर्थ को संकुचित मानकर मात्र नौकरी प्राप्त करना और वो भी सरकारी नौकरी प्राप्त करना ही अपना परम लक्ष्य मान बैठा है। तब ऐसे में Career बनाने की असफल दौड़ में नैतिकता, सस्कार, विनम्रता, अनुशासन, परोपकार और यहाँ तक कि स्वंय को भी भुलाकर लक्ष्यविहीन दिशा में दौड़ता चला जा रहा है, ऐसे में तनाव, अवसाद, लोभ, क्रूरता, क्रोध, ईर्ष्या और असहनशीलता से घिरे हुए युवा वर्ग के लिए इस समाज से विलुप्त होते हुए संस्कारों पर पुनर्विचार और आत्मावलोकन को नितान्त आवश्यक माना हैं। इस आवश्यकता को महसूस (अनुभव) करते हुए महाविद्यालय के द्वारा इस प्रकार की शैक्षिक कार्यशाला के माध्यम से पूर्व की भांति प्रयास किया गया हैं।

शिक्षा का लक्ष्य एक सभ्य समाज का निर्माण करना है। यह तभी संभव हो पाएगा जब वैदिक शिक्षा दर्शन के अनुसार आचार्य और शिष्य परम्परा का निर्वहन करते हुए शिक्षक अपने विद्यार्थी को "मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषों वेद" की परम्परा से जोड़ेंगे। इसी भावना को लिए हुए मानव निर्माण के लिए उपयोगी वैदिक शिक्षा दर्शन ही एक ऐसा माध्यम है जो मनुर्भव का संदेश देते हुए राष्ट्र की युवा पीढ़ी को जीवन में आने वाले संघर्ष रूपी आँधी, तूफानों और झंझावातों से विचलित न होकर अडिग एवं अचल रहते हुए उददेश्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। आज कार्यशाला के समापन समारोह में मुख्यतिथि के रूप में पधारे अधीति विद्वान, वैदिक शिक्षा दर्शन के जीवन्त प्रतिरूप आचार्य देवव्रत जी, माननीय राज्यपाल, गुजरात हम सब के बीच में विराजमान हैं माननीय राज्यपाल जी के उदबोधन से यह कार्यशाला निश्चित रूप से अपने उद्देश्य की पराकाष्ठा को प्राप्त करेगी। साथ ही माननीय सांसद महोदय एवं माननीय विधायक महोदय के सद्–परामर्शों से कार्यशाला की गरिमा भी द्विगुणित होगी।

धन्यवाद

27.04.022

10.05.2022

संकाय विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत
पा.ठि्वसीय वैदिक कार्यशाला पर आधारित
निबन्ध लेखन प्रतियोगिता - परिणाम।

क्र॰ सं॰	नाम	पिता का नाम	कक्षा	रोल नं॰	पुरस्कार
1	अमनदीप कौर	श्री रमेश कुमार	बी॰ए॰ II	1202090002237	प्रथम (1100/-)
2.	साक्षी	श्री अमरजीत	बी॰ए॰ I	1212092002167	द्वितीय (1100/-)
3.	सोनाली कुमारी	श्री सुनील कुमार	बी॰एससी॰ III	3148720024	तृतीय (1100/-)
4.	आरती	श्री जियालाल	बी॰ए॰ III	3148420184	सांत्वना

[signature] 10.05.022

[signature] 10.5.22

पुरस्कार राशि

1. 1100/- Ankay
2. 1100/- Sakshi
3. 1100/- Sonali

ओ३म्

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदत्त
(कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से सम्बद्ध)

स्थापित -1982

प्रमाण-पत्र

सत्र 2021—22

प्रमाणित किया जाता है कि कु॰ साक्षी सुपुत्री श्री अमरजीत

अनुक्रमांक 12120920002167 कक्षा बी॰ए॰ प्रथमवर्ष ने आई॰क्यू॰ए॰सी॰ एवं आर्य युवती परिषद् द्वारा

आयोजित वैदिक कार्यशाला में निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया और द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 10.05.022

संयोजिका

प्राचार्या

ओ३म

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदत्त

(कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से सम्बद्ध)

स्थापित -1982

प्रमाण-पत्र

सत्र 2021—22

प्रमाणित किया जाता है कि कु॰ सोनाली कुमारी सुपुत्री श्री सुनील कुमार

अनुक्रमांक 31487002024 कक्षा बी॰एससी॰ तृतीयवर्षीय आई॰क्यू॰ए॰सी॰ एवं आर्य युवती परिषद् द्वारा

आयोजित वैदिक कार्यशाला में निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया और तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 10.05.022

संयोजिका

प्राचार्या

ओ३म्

दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र

तमसो मा ज्योतिर्गमय

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदत्त

(कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से सम्बद्ध)

स्थापित -1982

प्रमाण-पत्र

सत्र 2021-22

प्रमाणित किया जाता है कि कु॰ आरती सुपुत्री श्री जियालाल

अनुक्रमांक 3148420184 कक्षा बी॰ ए॰ तृतीय वर्ष ने आई॰ क्यू॰ ए॰ सी॰ एवं आर्य युवती परिषद् द्वारा

आयोजित वैदिक कार्यशाला में निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया और सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 10.05.022

संयोजिका

प्राचार्या

ओ३म्

दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदत्त
(कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से सम्बद्ध)

स्थापित -1982

प्रमाण-पत्र

सत्र 2021–22

प्रमाणित किया जाता है कि कु॰ अमनदीप कौर सुपुत्री श्री रमेश कुमार

अनुक्रमांक 1202090022237 कक्षा बी॰ए॰ द्वितीय वर्ष ने आई॰ क्यू॰ ए॰ सी॰ एवं आर्य युवती परिषद् द्वारा

आयोजित वैदिक कार्यशाला में निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया और प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

दिनांक 10.05.022

सयोजिका

प्राचार्या

Press Note

22.04.2022

Today, on 22 April 2022, five days National Education Workshop on 'Significance of Vedic Education Philosophy in Present Scenario' organized by I.Q.A.C. and Arya Yuvti Parishad, Dayanand Mahila Mahavidyalaya, Kurukshetra, was inaugurated by lightening the pious lamp with a pray to get knowledge by the Chief Guest, Prof. Roopkishore Shastri, Vice-Chancellor, Gurukul Kangri Deemed University, Haridwar followed by chanting Ved Mantras by students of the college. On this pious occasion, the Distinguished Guest Dr. Shwetank Arya, Joint Registrar, Gurukul Kangri Deemed University, Haridwar; President, Governing Body, Dr. Rajender Vidyalankar; Principal, Dr. Vijeshwari Sharma; Conveners, Dr. Suman Rajan and Mrs. Anju Chawla were also present.

Dr. Suman Rajan, Convener, Arya Yuvti Parishad heartily welcomed the Chief Guest, and other dignitaries sitting on the treasury desk. Hon'ble President Dr. Rajender Vidyalankar and Principal Madam presented an organic plant to the Chief Guest and the Distinguished Guest. While welcoming the Chief Guest, Hon'ble President, Governing Body acclaimed the great contribution made by him in spreading Vedic Culture while working as a secretary in "Maharishi Sandipni Rashtriya Ved Vidya Pratishtan-Ujjain" for five years. He further informed that Hon'ble Chief Guest, following the doctrine "Liberal Attitude towards the individual and adherence to Principles", has worked very hard as an expert of Vedic Shastras to take Gurukul Kangri Deemed University, Haridwar to the new peaks of success.

During his inspirational address to the house, the Chief Guest, Prof. Roopkishore Shastri appreciated the whole DMM fraternity for being associated with the prestigious institution named after Swami Dayanand Saraswati. He further congratulated all the teachers and students for reflecting good conduct and character embedded with Vedic Culture. He emphasized the great contribution of Swami Dayanand Saraswati in the field of Vedic Education which has become the basis of National Education Policy 2020. He also threw light on the importance of reading "Satyarth Prakash " by Swami Dayanand Saraswati.

Further, he emphasized that individuals can become good human beings by following the principles written in the third Samullas of 'Satyarth Prakash' of "Matrimaan, Pitrimaan, Acharyavaan" in a unified manner. He also threw light on the significance of the mother tongue while getting and imparting education, which helps in the holistic development of a child.

Afterwards, Principal, Dr. Vijeshwari Sharma conveyed her warmest thanks to the Chief Guest for his intense and inspirational address. She also conveyed her heartfelt thanks to Dr. Rajender Vidyalankar, President for his constant guidance and motivation. She also expressed her thanks to the whole DMM fraternity.

She further stated that the students and all teachers were benefitted from his intellectual discourse. She informed the Chief Guest about the availability of rare Vedic literature in the college library. She also said that if Vedic education philosophy has collaborated with the modern education system, it will help in eradicating the social evils.

In the end, Hon'ble President, Governing Body and Principal Madam & Convener, Mrs. Anju Chawla presented a memento to the Chief Guest and Distinguished Guest as a token of appreciation.

In the workshop, all the faculty members and postgraduate students were present. Dr. Suman Rajan conducted the stage.

The program was concluded by playing Kulgeet of the college as a mark of respect to the esteemed institution.

Press Note

23.04.2022

Under Faculty Development Programme organized by IQAC and Arya Yuvti Parishad, on the second day of five days National Education Workshop on 'Significance of Vedic Education Philosophy in Present Scenario', Swami Videh Yogi, founder of Swasti Path, Kurukshetra graced the occasion as Chief Guest.

Dr. Vijeshwari Sharma, Principal welcomed the Chief Guest by presenting him with an organic plant. In her welcome address, while giving the introduction of the Chief Guest, Principal Madam expressed that Swami Ji, despite having a Ph.D. in Vedas, chose the path of Social Service. He has dedicated his whole life to spread Vedic Education among youth through the organization of various camps. His great contribution in the character building of youth would be appreciated by all.

In his inspirational address, Swami Videh Yogi explained the status of the present education system. He expressed that even after Independence, British Education System and bureaucracy are dominating our societies and consequentially impacting the youth of our country in a negative way.

Swami Ji enlightened the audience about the significance of Vedic Education. He emphasized that a person cannot think independently if he is a linguistical slave. He further stated that a prominent feature of the mother tongue is that it helps in uniting people to its traditional culture. If we do not use our mother tongue, there is a paradigm shift in the culture and traditions of the country. In his lecture, he also threw light on the ancient Indian Education system. The basis of the ancient education system was character building, patriotism, good conduct, and to make a cultured being whereas the present education system has become money-centric only. It hinders the physical and intellectual development of a person. He concluded his intellectual discourse with an appeal towards having respect for mother tongue, close association with one's culture and high character building.

Afterwards, Mrs. Anju Chawla, Convener, conveyed her heartfelt thanks to the Chief Guest for his intense and inspirational address. She stated that Swami Ji threw light on every aspect of the ancient and modern education system.

In the end, the worthy principal madam and the conveners presented a memento to the Chief Guest as a token of appreciation. All the faculty members and post-graduate students were present in the workshop. Dr. Arti Aggarwal conducted the stage. The second day of the program was concluded by playing Kulgeet of the college as a mark of respect to the esteemed institution.

Press Note

25.04.2022

On the third day of five days National Education Workshop in 'Significance of Vedic Education Philosophy in Present Scenario' organized by IQAC and Arya Yuvti Parishad, Dayanand Mahila Mahavidyalaya, Kurukshetra, Prof. Surender Kumar, Dept. of Sanskrit, Maharishi Dayanand University, Rohtak graced the occasion as Chief Guest.

Dr. Rajender Vidyalankar, President, Governing Body, and Dr. Vijeshwari Sharma, Principal presented an organic plant to the Chief Guest. In his formal introduction of the Chief Guest, Dr. Rajender Vidyalankar expressed that Prof. Surender Kumar has been associated with the teaching-learning process for the last few years. He has got his formal education from Gurukul, Etah, Gurukul Jwalapur and Gurukul Kangri Deemed University, Haridwar. He also stated that Prof. Surender Kumar is an eminent expert in Vedas, Philosophy and Grammar.

In his inspirational address, Prof. Surender Kumar emphasized the significant role of Vedic Education Philosophy to make a human being civilized. Vedic Education helps a man to be a cultured being. He stressed that man should always be a researcher throughout his life as education leads to civilization. He also emphasized that education should not only be based on meaning but it should also be based on values and humanity.

He explained the concept of overall development based on Vedic Education Philosophy. He emphasized that our ancient education system was able to develop human beings physically, emotionally, intellectually and spiritually in a unified manner but our present education system does not follow this philosophy in its true spirit. He concluded his address by expressing that Vedic Education Philosophy must be implemented for the holistic development of humanity.

Afterwards, Dr. Vijeshwari Sharma conveyed heartfelt thanks to the Chief Guest and all the dignitaries present there. In her address, she expressed that the Chief Guest threw light on the real objective of education and its impact on society. In the end, Principal Madam conveyed her thanks to all the present persons and the conveners of the program and presented momento to the Chief Guest.

Dr. Reeja hoisted the stage. All the faculty members and our PG students were also present there in the workshop. The program was concluded by playing Kulgeet of the college as a mark of respect to the esteemed institution.

Reeja

Press Note

26.04.2022

Under Faculty Development Programme organized by IQAC and Arya Yuvti Parishad, on the fourth day of five days National Education Workshop on 'Significance of Vedic Education Philosophy in Present Scenario', Dr. Vagish Acharya, Principal, Arsh Gurukul Mahavidyalaya, Etah graced the occasion as Chief Guest. The discourse was organized through an online mode.

Dr. Rajender Vidyalankar, President, Managing Committee of the college formally welcomed the Chief Guest. He introduced the Chief Guest to the audience and expressed that Dr. Vagish Acharya is a gem of person and a great philosopher of Vedic Education Philosophy. He always leaves an indelible mark on the minds of the audience through his motivational address. He is a great scholar of Vedas. In his inspirational address, Dr. Vagish Acharya expressed that Vedas are a significant source of divine knowledge. Except human beings, all other living creatures inherit knowledge by birth. Human beings can be civilized through education and with the combined efforts of parents and teachers etc. Vedic Education Philosophy develops not only the minds but also sharpens the intellect of human beings whereas the modern education system does not provide holistic development of human beings. So, he emphasized the significance of Vedic Education Philosophy for developing human beings at all levels—physical, intellectual, emotional and spiritual. The Vedas advocate knowledge, religion, and worship in a unified manner. Vedic Education Philosophy distinguishes true & untrue and right & wrong which makes human beings sensitive beings.

Afterwards, Dr. Vijeshwari Sharma conveyed heartfelt thanks to the Chief Guest. Through her address, she expressed that Dr. Vagish Acharya inspired us to learn and adopt Vedic Education Philosophy in our life. The modern Education System does not help in the overall development of children. It is money-centric only and it hampers the mental and spiritual development of human beings. Today's education system has turned humans into machines. This is the main cause of increasing unrest in the world. So, we must adopt Vedic Education Philosophy in our daily life to develop humanity holistically. In the end, Principal Madam conveyed her thanks to all the present persons.

In the workshop, Dr. Urmila Panghal conducted the stage and all PG students along with the faculty members attended the workshop. The program was concluded by playing Kulgeet of the college as a mark of respect to the esteemed institution.

Press Note

27.04.2022

In the Valedictory session of five days National Education Workshop organized by IQAC and Arya Yuvti Parishad, Dayanand Mahila Mahavidyalaya, Kurukshetra, Acharya Devvrat, Governor of Gujarat graced the occasion as Chief Guest. The programme was started with the lightening of pious lamp by the Chief Guest. On this auspicious occasion, Sh. Nayab Singh Saini, MP, Kurukshetra; Sh. Subhash Sudha, MLA Thanesar; Dr. Rajender Vidyalankar, President, College Managing Committee; Sh. Ram Swarup Nain, General Secretary, Managing Committee; Dr. Vijeshwari Sharma, Principal; Dr. Suman Rajan, Convener, Arya Yuvti Parishad and Mrs. Anju Chawla, Convener, IQAC graced the event with their esteemed presence.

The students of Music Dept. welcomed the Chief Guest with a welcome song. Further Dr. Rajender Vidyalankar, President, Governing Body heartily welcomed the Chief Guest and the Distinguished Guests and gave a brief introduction of the guests. While welcoming the Chief Guest, Dr. Rajender Vidyalankar, expressed that Acharya Devvrat explored the ways to encourage organic agriculture produce. As a result of this, Prime Minister of India Sh. Narender Modi has fixed a share for organic agriculture in the present budget. We feel privileged and blessed to have such an eminent personality in our college.

Worthy Dr. Rajender Vidyalankar welcomed Sh. Nayab Singh Saini, M.P., Sh. Subhash Sudha, MLA and other dignitaries present on the treasury desk.

Further Dr. Suman Rajan, the Convener of the program presented a brief report of discourses for the last four days' workshop on 'Significance of Vedic Education Philosophy in the Present Scenario'.

In his illuminating address, Hon'ble Sh. Subhash Sudha, MLA expressed that Vedic Education system is an ancient education system but now we have forgotten its significance. He also congratulated and expressed his warm wishes for accredited Dayanand Mahila Mahavidyalaya with Grade 'A' by NAAC.

In his intense address, Sh. Nayab Singh Saini, MP expressed that 'Guru Shishya Tradition' took its origin from Vedic Education Philosophy for which Acharya Devvrat has put relentless efforts to create awareness among people. The base of Vedic Education is to inculcate human values and culture which can be imbibed by the society towards the path of civilization. That is why Vedic Education Philosophy has always been relevant to society.

In his inspirational and illuminating address, Worthy Acharya Devvrat heartily congratulated the institution for its 40 years of a glorious journey. Through its establishment, the great initiative of the founders of this college to provide education embedded with moral values to the girls students of urban and rural areas is an act of performing 'Holy Yajna'. He further appreciated the achievements of girls students who brought many laurels to the institution. He conveyed his warm wishes to all DMM fraternity and expressed that the institution is doing a great job by imparting value-based education to the girls students and helping them develop holistically. The society is getting more and more attracted towards materialism and consequentially. Human values and Vedic Culture are on the decline in the present scenario. On global level, the feeling of insecurity has been rampant due to the threats of war and restlessness. He criticized the education system provided by Lord Macaulay which has worsened the Indian education system. By implementing National Education Policy 2020, the Hon'ble Prime Minister of India has resolved to improve the Present Education System and he has taken a pledge to take the nation towards its bright future globally.

In his intense address, Acharya Devvrat also threw light on the great contribution of Swami Dayanand Saraswati and Arya Samaj in the field of education. Indian Vedic Philosophy follows the concept – 'Let everyone be happy and it develops the feeling' – 'The World is one family'.

Afterwards, President, Governing Body and Principal Madam presented a momento to the Chief Guest as a mark of respect and appreciation.

General Secretary, Governing Body and Dr. Suman Rajan, Convener, presented a momento to M.P. General Secretary, Governing Body and Mrs. Anju Chawla, Convener, presented a momento to MLA.

In the end, Respected Principal Madam conveyed heartfelt gratitude to Hon'ble Chief Guest for his illuminating discourse by leaving an indelible mark on the minds of the audience. She also expressed her warm thanks to all the dignitaries present over there. She also thanked the Managing Committee of the college, all the students and the whole DMM fraternity. The stage was conducted by Mrs. Anju Chawla. The program was concluded with the National Anthem.